

अभ्यासवान् भव

दशमकक्षायाः संस्कृतस्य अभ्यासपुस्तकम्



1075

विद्यया ऽ मृतमश्नुते



एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-93-5292-141-6

प्रथम संस्करण

मई 2019 ज्येष्ठ 1941

पुनर्मुद्रण

अक्तूबर 2019 अश्विन 1941

फरवरी 2021 माघ 1942

PD 30T RPS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण
परिषद्, 2019

₹ ??-00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर
पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली
110 016 द्वारा प्रकाशित तथा

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पच्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन सी ई आर टी के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस श्री अरविंद मार्ग नयी दिल्ली 110 016	फ़ोन : 011-26562708
108, 100 फीट रोड हेली एक्सटेंशन, होस्टेकेरे बनाशकरी III स्टैज बेंगलुरु 560 085	फ़ोन : 080-26725740
नवजीवन ट्रस्ट भवन डाकघर नवजीवन अहमदाबाद 380 014	फ़ोन : 079-27541446
सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस निकट: धनकल बस स्टॉप पनहटी कोलकाता 700 114	फ़ोन : 033-25530454
सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स मालीगाँव गुवाहाटी 781 021	फ़ोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	:	अनूप कुमार राजपूत
मुख्य संपादक	:	श्वेता उपपल
मुख्य उत्पादन अधिकारी	:	अरुण चितकारा
मुख्य व्यापार प्रबंधक (प्रभारी)	:	विपिन दिवान
उत्पादन सहायक	:	

आवरण एवं चित्र

डी.टी.पी. प्रकोष्ठ

पुरोवाक्

भारतस्य शिक्षाव्यवस्थायां संस्कृतस्य महत्त्वमुद्दिश्य विद्यालयेषु संस्कृत-शिक्षणार्थम् आदर्श-पाठ्यक्रम-पाठ्यपुस्तकादिसामग्रीविकासक्रमे राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषदः भाषाशिक्षाविभागेन षष्ठवर्गादारभ्य द्वादशकक्षापर्यन्तं राष्ट्रियपाठ्यचर्यानुरूपं संस्कृतस्य आदर्शपाठ्यक्रमं निर्माय पाठ्यपुस्तकानि निर्मीयन्ते। अस्मिन्नेव क्रमे दशमकक्षायाः छात्राणां संस्कृतव्याकरणस्य अभ्यासार्थं चतुर्दशाध्यायेषु निर्मितस्य “अभ्यासवान् भव” इति नामधेयस्य अभ्यासपुस्तकस्य संस्करणं प्रस्तूयते। अत्र अपठितावबोधनेन सह पत्रलेखनम्, अनुच्छेदलेखनम्, रचनानुवादः, चित्रवर्णनम्, सन्धिः, समयः, वाच्यम्, अशुद्धिसंशोधनं, प्रत्ययसमासाव्ययप्रयोगः इति विषयेषु अभ्यासक्रमाः दत्ताः येन छात्रेषु संस्कृतभाषाकौशलानां विकासो भवेत्। एतदतिरिच्य मिश्रिताभ्यासद्वयम् आदर्शप्रश्नपत्रमेकम् अपि प्रदत्तं येन छात्राः भाषाकौशलेन सह परीक्षायाः कृतेऽपि सन्नद्धाः भवेयुः। परिशिष्टे ध्येयवाक्यानां, व्यवहारवाक्यानां चापि सन्निवेशः कृतः येन कक्षायामपि छात्राः संस्कृतभाषया सम्भाषणे समर्थाः भवेयुः। अनेन पुस्तकेन छात्राः संस्कृतस्य भाषाप्रयोगे दक्षाः भवेयुः इति एतदर्थमपि पुस्तकेऽस्मिन् प्रयत्नो विहितः।

पुस्तकस्यास्य प्रणयने आयोजितासु कार्यगोष्ठीषु आगत्य यैः विशेषज्ञैः अनुभविभिः संस्कृताध्यापकैश्च परामर्शादिकं दत्त्वा सहयोगः कृतः, तान् प्रति परिषदियं स्वकृतज्ञतां प्रकटयति। पुस्तकमिदं छात्राणां कृते उपयुक्ततरं विधातुम् अनुभविनां विदुषां संस्कृत-शिक्षकाणां च सत्परामर्शाः सदैवास्माकं स्वागतार्हाः।

नवदेहली
मार्च, 2019

हृषिकेशः सेनापतिः

निदेशकः

राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषद्

© NCERT
not to be republished

पुस्तक निर्माण समिति

सदस्य

आभा झा, पी.जी.टी. संस्कृत, गार्गी सर्वोदय कन्या विद्यालय, ग्रीन पार्क, नयी दिल्ली

कीर्ति कपूर, प्रोफेसर, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

लता अरोड़ा, सेवानिवृत्त, टी.जी.टी. संस्कृत, केंद्रीय विद्यालय नं 3, दिल्ली कैंट, नयी दिल्ली

वेदप्रकाश मिश्र, असिस्टेंट प्रोफेसर, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

शशिपाल शर्मा, निदेशक, जयति संस्कृतम्, नोएडा

सरोज गुलाटी, पी.जी.टी. संस्कृत, कुलाची हंसराज मॉडल पब्लिक स्कूल, अशोक विहार, दिल्ली

सरोज पुरी, सेवानिवृत्त, टी.जी.टी. संस्कृत, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल पीतम पुरा, नयी दिल्ली

समन्वयक

के.सी.त्रिपाठी, प्रोफेसर संस्कृत, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

जतीन्द्र मोहन मिश्र, प्रोफेसर संस्कृत, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, पुस्तक निर्माण समिति के सभी सदस्यों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती है। परिषद्, अनीता, रेखा, डी.टी.पी. ऑपरेटर, रिकेश भदूला, जे.पी.एफ., भाषा शिक्षा विभाग एवं पुस्तक के संपादन के लिए ममता गौड़, संपादक-संविदा, प्रवीन कुमार, नरेश कुमार, आरती, डी.टी.पी. ऑपरेटर, प्रकाशन प्रभाग, के प्रति भी हार्दिक आभार व्यक्त करती है।

© NCERT
not to be republished



भूमिका

गच्छन् पिपीलिको याति योजनानां शतान्यपि ।
अगच्छन् वैनतेयोऽपि पदमेकं न गच्छति ॥

शुद्ध भाषा प्रयोग के लिए और ग्रन्थों के भावों को आत्मसात् करने के लिए व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है। यद्यपि व्याकरण का प्रत्यक्ष ज्ञान देने का प्रचलन आज की शिक्षा पद्धति में नहीं है, पाठों में प्रयुक्त व्याकरण-बिंदुओं को अनेक उदाहरणों के द्वारा स्पष्ट किया जाता है। इस तरह व्याकरण के नियमों को स्मरण करने की नीरस प्रक्रिया से बच्चों को गुजरना नहीं पड़ता और व्याकरण वाक्य संरचना का नियमानुसार ज्ञान भी हो जाता है।

अभ्यासवान् भव में दशम कक्षा के विद्यार्थियों को पाठ्यक्रमानुसार अभ्यास हेतु पर्याप्त सामग्री उपलब्ध कराई गई है, जिससे वे न केवल आवश्यक व्याकरण-बिंदुओं से परिचित होते हैं, बल्कि वाक्य संरचना कौशल का पर्याप्त ज्ञान भी प्राप्त करते हैं। पुनः-पुनः अभ्यास करने से विषयों का ज्ञान हो जाता है और वह स्मृत विद्या चिरकालपर्यन्त याद रहती है। 'अनभ्यासे विषं विद्या' यह जानते हुए विद्यार्थियों को पर्याप्त अभ्यास करना चाहिए। इस अभ्यास पुस्तिका में अपठितांश, पत्र, चित्रवर्णन, अनुच्छेदलेखन, संस्कृतानुवाद, सन्धि, समास, प्रत्यय, अव्यय, समय, वाच्य और अशुद्धि संशोधन पर आधारित बारह पाठ हैं। इसके अतिरिक्त मिश्रित अभ्यास हेतु दो कार्यपत्रिकाएँ त्रयोदश पाठ में समाविष्ट की गई हैं। चतुर्दश पाठ में केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार एक आदर्श प्रश्न पत्र भी समाविष्ट किया गया है, जो परीक्षा हेतु तैयारी में सहायक होगा।

परिशिष्ट में ध्येय-वाक्यों और व्यवहार-वाक्यों का संकलन है, जिससे छात्रों की संभाषण क्षमता में वृद्धि होगी।

आशा है यह अभ्यास पुस्तिका छात्रों को संस्कृत भाषा-संरचना, व्याकरण एवं संस्कृत व्यवहार का अभ्यास कराने में सफल होगी। पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए सुधी समालोचकों के सत् परामर्शों का सदैव स्वागत है।

मङ्गलम्

अभ्यासः कार्यसिद्ध्यर्थं
नित्यं कुर्वन्ति पण्डिताः।
संसारे सिद्धिमन्त्रोऽयं
तस्मादभ्यासवान्भव॥

कार्य की सिद्धि के लिए समझदार लोग नित्य अभ्यास करते हैं। यह (अभ्यास) संसार में सिद्धि (प्राप्त करने) का मंत्र है। इसलिए (तुम भी) अभ्यास करने वाले बनो।

अभ्यसामो वयं विद्यां
यावतीमधिकाधिकाम्।
तावदग्रे जगत्यस्मिन्
सरिष्यामो न संशयः॥

हम विद्या का जितना अधिक से अधिक अभ्यास करते हैं, संसार में उतना ही आगे बढ़ेंगे इसमें संदेह नहीं है।



विषयानुक्रमणिका

पुरोवाक्	iii
भूमिका	vii
मङ्गलम्	viii
1. अपठितावबोधनम्	1
2. पत्रलेखनम्	11
(क) अनौपचारिकम् पत्रम्	
(ख) औपचारिकम् पत्रम्	
3. अनुच्छेदलेखनम्	18
4. चित्रवर्णनम्	21
5. रचनानुवादः (वाक्यरचनाकौशलम्)	31
6. सन्धिः	38
7. समासाः	48
8. प्रत्ययाः	57
9. अव्ययानि	76
10. समयः	81
11. वाच्यम्	84
12. अशुद्धिसंशोधनम्	89
13. मिश्रिताभ्यासः	94
14. आदर्शप्रश्नपत्रम्	101
परिशिष्टम्	
व्यवहार-वाक्यानि	108
ध्येय-वाक्यानि	112
संवादाः	113



શિક્ષિતા બાલિકા
શિક્ષિત: સમાજ:
સશક્તા બાલિકા
સશક્ત: સમાજ:
સ્વસ્થા બાલિકા
સ્વસ્થ: સમાજ:

